NIKOLAI NOSOV

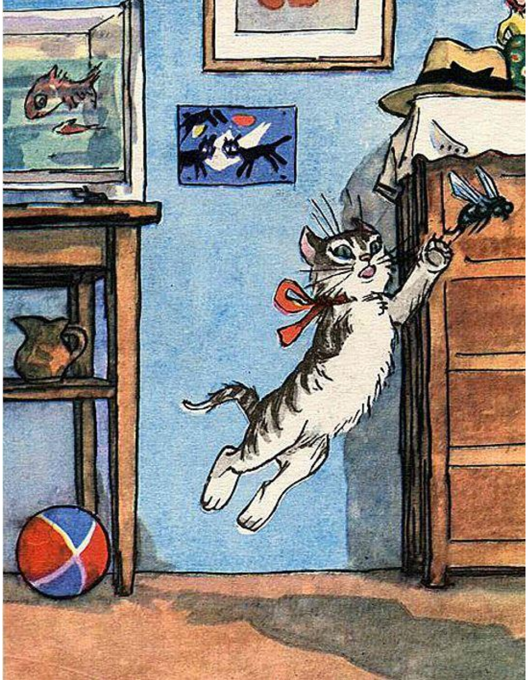
निकोलाई नोसोव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता



ज़िंदा टोपी

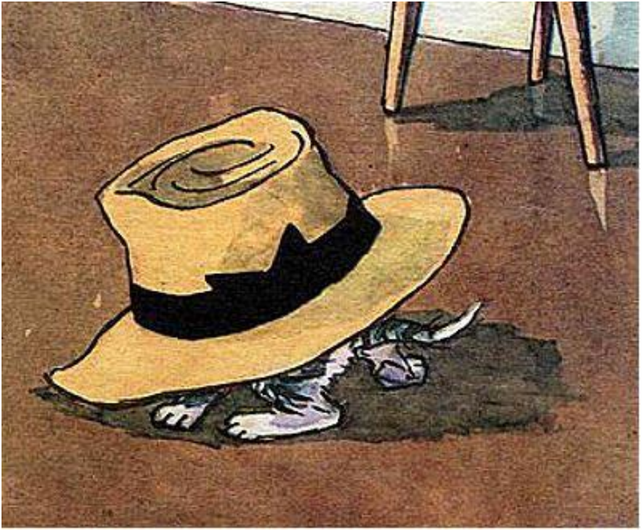
A LIVE HAT



मुर्ज़िक एक बिल्ली का बच्चा था. वो फर्श पर दराज़ों वाली एक अल्मारी के पास बैठा मक्खियां पकड़ने की कोशिश कर रहा था.



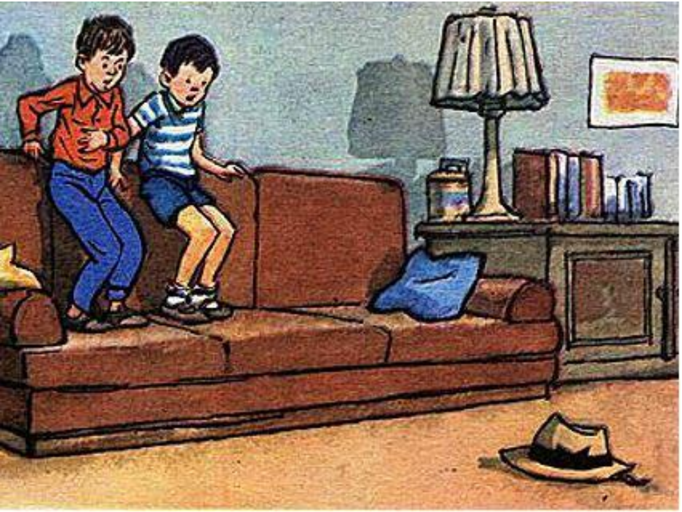
अल्मारी के बिल्कुल किनारे पर एक टोपी रखी हुई थी. मुर्ज़िक ने एक मक्खी को टोपी पर बैठे हुए देखा. वो उछला और उसने अपने पंजे टोपी में गड़ा दिए. मुर्ज़िक अल्मारी की किनार से फिसल गया. मुर्ज़िक ने अपनी पकड़ खो दी और वो नीचे गिर गया.



टोपी तैरकर नीचे आई और ठीक मुर्ज़िक के ऊपर आकर गिरी. मुर्ज़िक अब कहां था?



वोवा और वाडिक अपनी चित्रों वाली किताबों में रंग भरने में व्यस्त थे. उन्होंने मुर्ज़िक पर टोपी गिरते हुए नहीं देखी, हालाँकि उन्होंने एक अजीब सी आवाज़ ज़रूर सुनी.



वोवा यह देखने के लिए मुड़ा कि वो आवाज़ क्या थी. टोपी फर्श पर पड़ी थी. वो उसे उठाने के लिए उसके पास गया. लेकिन जैसे ही वो नीचे झुका वो ज़ोर से चिल्लाया:

"मदद करो!"

"क्या बात है?" वादिक ने पूछा.

"वो ज़िंदा है!"

"कौन?"

"वो टोपी !"

"मूर्ख जैसी बातें मत करो."

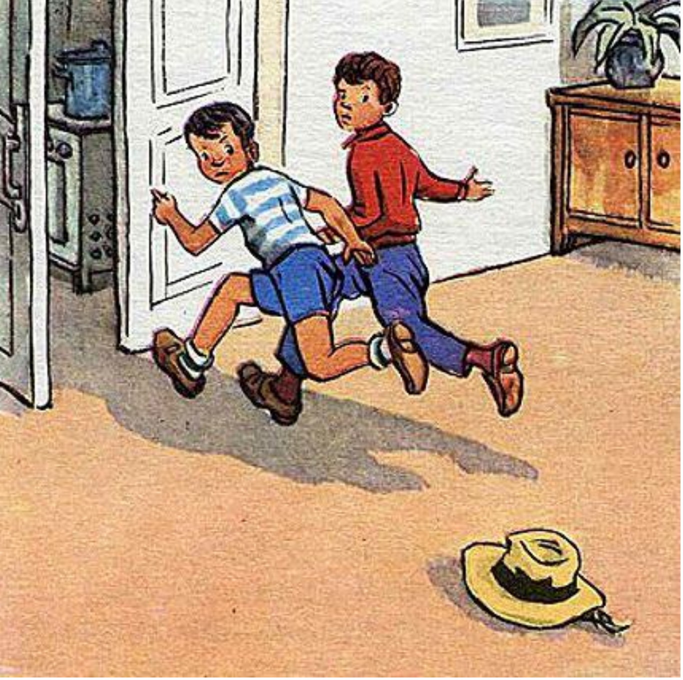
"लेकिन वो ज़िंदा है!"

वादिक खुद देखने के लिए उठा.

अचानक टोपी उसकी ओर रेंगने लगी.

वो भी चिल्लाया और सोफे की ओर भागा.

वोवा ठीक उसके पीछे कूदा.



इस बीच, टोपी रेंगते हुए कमरे के बीच में पहुंच गई और वहां पर रुक गई. यह देखकर लड़कों का दिल जोर से धड़कने लगा. अब टोपी उनकी ओर बढ़ रही थी.

"अरे!"

"मदद करो!"

वे नीचे कूदे और कमरे से बाहर भाग गए.



जब वे रसोई में पहुँचे तो उन्होंने अपने पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया.

"टोपी को क्या हुआ होगा? वो इस तरह क्यों चल रही है?" वोवा ने आश्चर्य से पूछा.

"शायद उसे कोई डोर से खींच रहा हो."

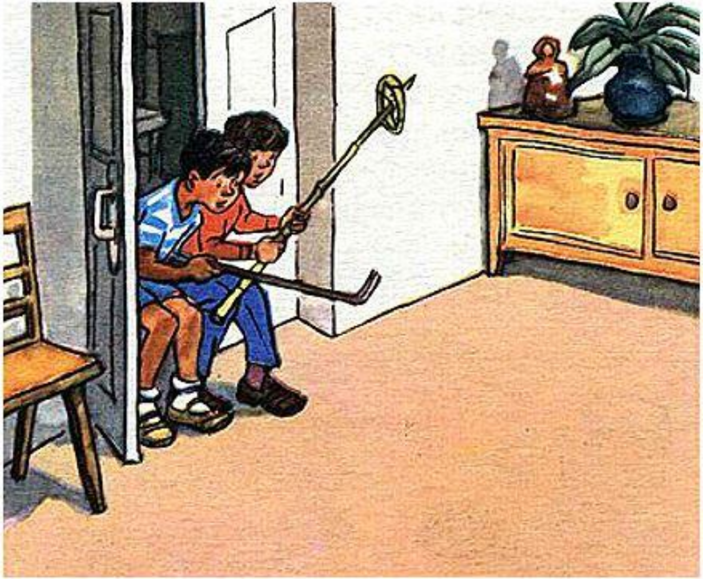
"जाओ और जाकर देखो."

"चलो हम एक साथ चलते हैं. मैं पोकर वाला डंडा लूंगा. अगर वो हमारी ओर रेंगना शुरू करेगी, तो मैं उसे जोर से मारूंगा."

"ज़रा रुको! मैं भी एक पोकर लेता हूँ."

"लेकिन हमारे पास केवल एक ही पोकर है."

"फिर मैं कोई दूसरा डंडा लूंगा."



उन्होंने खुद को पोकर और एक डंडे से लैस किया, फिर उन्होंने धीरे से दरवाजा खोला और बाहर देखा.

"वो कहां है?"

"वहां, उस कोने में."



टोपी वहीं फर्श पर पड़ी थी.

"देखा? वो अब हमसे डरती है!"

"ज़रा मुझे उसे डराते हुए देखो," वोवा ने कहा.

उसने अपने पोकर को मेज के पैर पर मारना शुरू कर दिया.

"अरे सुनो!"

लेकिन टोपी नहीं हिली.

वादिक ने कहा, "चलो हम उस पर दूर से आलू मारते हैं."



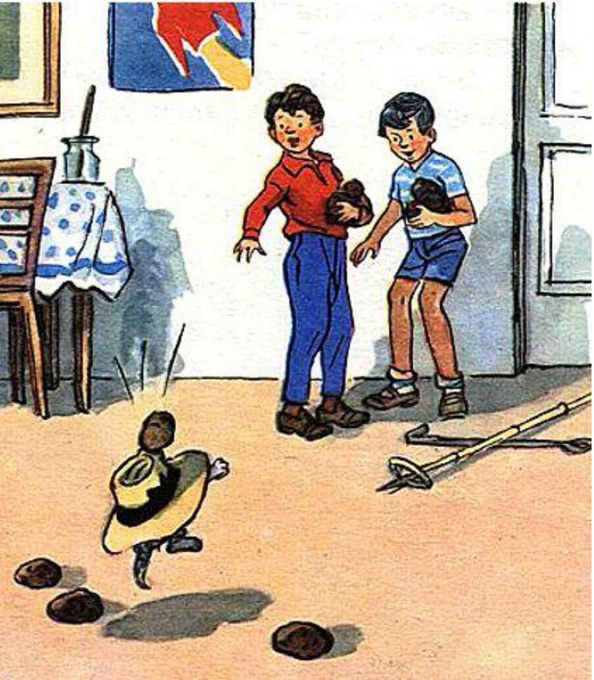
वे आलू लेने के लिए रसोई में वापस गए.
फिर उन्होंने टोपी पर आलू फेंकने शुरू किए.

आख़िरकार, वादिक ने बाजी मार ली.

टोपी हवा में उछली और चिल्लाई: मियाऊं!

टोपी की एक किनारे के नीचे से थोड़ी सी भूरे
रंग की पूंछ निकली हुई थी.

"मुर्ज़िक!" दोनों लड़के चिल्लाए.



वादिक ने बिल्ली के बच्चे को पकड़कर अपने गले से लगा लिया.

"बेचारी मुर्ज़िक! तुम उस टोपी के नीचे कैसे पहुंचीं?"

लेकिन मुर्ज़िक ने कुछ नहीं कहा. वो बस घुरघुराई और तेज रोशनी में अपनी आंखें सिकोड़ने लगी.



